UG

Study material for students by History Deptt.

U.G Semester IV ; paper - MJC-06

1. Subject : History

4. Topic :- Nature of Renaissance in Europe
(यूरोप में पुनर्जागरण का स्वरूप)

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara
(V.K.S.U, Ara)

Scanned by CamScanner

By :-
Dr. Rajiv Nayan

पुनर्जागरण का स्वरूप
(Nature of Renaissance)

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महान प्रणेता इटली के महाकवि दांते थे जिनकी पुस्तक 'Divine Comedy' इतालवी भाषा में लिखी गई पहली पुस्तक है। इनकी दूसरी रचना 'The Monarchia' है। उन्हें पुनर्जागरण का अग्रदूत कहा जाता है और पुनर्जागरण का प्रथम व्यक्ति भी। उसने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की आलोचना कर विचार-स्वातंत्र्य का उदाहरण प्रस्तुत किया। पैट्रार्क ने भी कई प्राचीन परंपराओं तथा विश्वासों पर आलोचना एवं तुलना के नये अस्त्रों द्वारा आघात किया। पैट्रार्क को सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महान पथ-प्रदर्शक कहा जाना युक्तिसंगत होगा। 14वीं शताब्दी के अंतिम दिनों में मानवतावाद, व्यक्तिवाद, धर्मनिरपेक्षता, साहित्यिक मनोभाव जिज्ञासा तथा अनुसंधान की दृष्टि, सहज सौंदर्य की उपासना, मध्यवर्गीय चेतना, बहुमुखी प्रतिभा का विकास, बौद्धिकता पर बल आदि तत्वों को विश्लेषित कर हम यूरोप को आधुनिक काल में प्रविष्ट कराने वाले पुनर्जागरण के स्वरूप को रेखांकित कर सकते हैं।

(1) **मानवतावाद (Humanism)** :- पुनर्जागरण के चिन्तन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मानवतावाद थी। मानवतावाद का अर्थ है- मानव जीवन में रुचि लेना, मानव की समस्याओं का अध्ययन करना, मानव का आदर करना, मानव-जीवन के महत्व को स्वीकार करना तथा उसके जीवन को सुधारना, समृद्ध एवं उन्नत बनाने का प्रयास करना।

मानववादी स्वरूप

इतिहासकार हेज (Hayes) ने अपनी पुस्तक 'Modern

Scanned by CamScanner

(2)

Europe to 1870 में लिखा है, "Renaissance (New Learning) was attended by Humanism" (नवजागरण की प्रस्तुति मानवतावाद द्वारा हुई।)

मानवतावाद वह धारणा थी जिसने एक ओर तो प्राचीन साहित्य में ही सभी गुण, मानवता, माधुर्य, सौन्दर्य एवं जीवन का वास्तविक सार देखा, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता, वैराग्य एवं धर्मशास्त्रों की सार्थकता से स्पष्ट इंकार कर दिया। इस धारणा को स्वीकार करने वाले मानवतावादी कहलाए। प्राचीन यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति का हिमायती पैट्रार्क (Petrarch) मानववाद का पिता (Father of the Humanism) कहा जाता है। माइकेल ऐंजेलो, दोनातेलो, मैकियावेली, फेचिनोपोलिशियन, पैरुजिनो, लियोनार्डो द विंची, ल्यूका देला रोबिया, फ्रा फिलिप्पो लिप्पी, सैंड्रो बातिचेली, दाँते एवं अलबर्टी आदि पुनर्जागरण काल के प्रमुख मानववादी थे।

प्राचीन यूनानी साहित्य में जीवन के प्रति एक विशेष रुचि झलकती है; क्योंकि यूनानी लोग परलोक की तुलना में इहलोक को ज्यादा महत्व देते थे। इसी के गंभीर अध्ययन से मानवता को समझने की एक नई प्रवृत्ति प्रारंभ हुई। उस काल में परलोक की जगह लौकिक रुचि को महत्व देने की विचारधारा को ही मानवतावाद कहा गया।

'मानवतावाद' मानव की गरिमा, महिमा, अनिवार्य श्रेष्ठता तथा मानव की व्यापक सृजन-शक्ति की क्षमता में अटूट विश्वास करता था।

Scanned by CamScanner

यह ऐसे मानव की धारणा पर केन्द्रित था जो लौकिक सुखों का त्याग नहीं करता, धार्मिक तप का निषेध करता है तथा सांसारिक इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को तुष्ट करने के मानव-अधिकार की वकालत करता है।

मानवतावाद के अन्तर्गत कैथोलिकों के विश्वास का खण्डन किया गया है कि मानव-अस्तित्व का प्रारंभ 'पाप' से हुआ है। मानवतावादी, धार्मिक अनुष्ठानों एवं वैराग्य का उपहास उड़ाते थे। वे मानव को इसी धरती पर सुख खोजने एवं उसे भोगने की सलाह देते थे। मानवतावादी मानते थे कि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति संसार को समझने तथा उस पर नियंत्रण करने के साथ-साथ स्वयं अपने सुख की व्यवस्था करने की क्षमता रखता है। इन विचारों से उत्तरोत्तर 'दैवीय क्षेत्र' का ह्रास और 'मानव क्षेत्र' का विस्तार हुआ। इटली में उदित 'मानववाद' के सूर्य की किरणें वहीं तक सीमित नहीं रहीं; समस्त यूरोप इनकी रोशनी से जगमगा उठा। मानववाद की रश्मियों ने यूरोप में पुनर्जागरण की लहर पैदा कर दी और धर्म सुधार आंदोलन के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

(ii) धर्मनिरपेक्षता (Secularism) :- पुनर्जागरण की स्वभावगत विशेषता धर्मनिरपेक्षता थी। पुनर्जागरण काल से लोगों के जीवन पर से धर्म का नियंत्रण कमजोर होना प्रारंभ हुआ। इसी अर्थ में पुनर्जागरण ने धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के उदय का वातावरण निर्मित किया। मानवतावाद के केन्द्र में आने से धर्मनिरपेक्षता की शुरुआत हुई। मानववादियों की रुचि देवताओं, देवदूतों एवं शैतानों की अपेक्षा अपने चारों ओर के भौतिक विश्व एवं इससे संबंधित बातों में अधिक थी। यहाँ धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य है -

धर्मनिरपेक्षता स्वरूप

सांसारिक कार्यों में अधिक रुचि लेना एवं अपने आध्यात्मिक विश्वासों पर संदेह व्यक्त करना। फिर भी, ईसाईयत की सच्चाई पर संदेह व्यक्त नहीं किया गया। धर्मनिरपेक्षता के प्रभाव में ही भ्रष्ट पादरियों की आलोचना की गयी।

(3) तर्कवाद (Rationalism) :- पुनर्जागरण ने मध्ययुगीन धर्म एवं परम्पराओं से नियंत्रित चिन्तन से मुक्त कर तर्क को बढ़ावा दिया। विश्वविद्यालयों ने तर्क की विचारधारा को आगे बढ़ाया तथा उसी बात को सही मानने का निर्णय लिया जो तर्क की कसौटी पर खरा उतरे। यह परिवर्तन महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू की कृतियों के लैटिन अनुवादों के पश्चात आना प्रारंभ हुआ था। अरस्तू के तर्कशास्त्र ने विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षाओं को तर्क के आधार पर प्रामाणिक सिद्ध करने का अवसर प्रदान कर दिया था। यह नया ईसाई दर्शन शास्त्र 'तर्कवाद' के रूप में जाना गया। इसका जन्मदाता तथा संस्थापक पेरिस विश्वविद्यालय का प्रोफेसर सन्त थामस एक्वीनास था। उसने अपनी सुप्रसिद्ध कृति 'सुमा' में ईसाई धर्म की दार्शनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर देने का दावा किया था। वास्तव में, उसने आस्था व तर्क के मध्य एक ऐसा संतुलन प्रस्तुत कर दिया था, जिससे ईसाई

तर्कवादी स्वरूप

Scanned by CamScanner

धर्म के धार्मिक विश्वासों को एक तार्किक आधार प्राप्त हो गया था। जैसे-जैसे तर्कवाद विकसित होता गया, इसमें वैज्ञानिकता का समावेश होता गया। अपने विचारों की पुष्टि हेतु अब प्रयोग का महत्व बढ़ने लगा। रोजर बेकन प्रयोगात्मक खोज का अग्रदूत था। इन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के दो साधन हैं - वाद-विवाद (विचार-विमर्श) तथा प्रयोग। वाद-विवाद प्रश्न का अंत तो कर देता है, लेकिन इसमें प्रमाण का अभाव होता है। अनुभव एवं प्रयोग के द्वारा ही सत्य की प्राप्ति होती है। बाद में यही प्रयोग आधुनिक विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता बनी। मानववादी दर्शन के विकसित होने की बुनियाद भी तर्कवाद में निहित थी।

(4) व्यक्तिवाद (Individualism) :-

मानवतावाद ने न सिर्फ सामान्य मानव का, बल्कि एक व्यक्ति का भी गुणगान किया। अतः व्यक्तिवाद पुनर्जागरण की सांसारिक भावना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्वरूप है। इस काल में एक-एक व्यक्ति के महत्व, उसकी समस्याओं तथा विशेषताओं को समझा गया। इस दृष्टिकोण से मध्यकालीन और पुनर्जागरणकालीन स्वरूप में ज्यादा फर्क प्रतीत नहीं होता। ईसाई धर्म ने व्यक्ति की गरिमा और व्यक्तित्व को जितना ऊपर उठाया उतना शायद ही किसी और शक्ति ने उठाया था। ईसाई धर्म के अनुसार, एक नन्ही चिड़िया के जीवन की चिंता भी ईश्वर करता है, फिर ईश्वर मनुष्य की कितनी चिन्ता करता होगा जो उसी का प्रतिबिम्ब है। मध्यकालीन पादरी अहंकार को सबसे बड़ा पाप मानते थे, फलतः मध्यकालीन कलाकारों व साहित्यकारों ने अपनी कृतियों पर अपने नाम तक का उल्लेख नहीं किया। वे अपनी उपलब्धियों को ईश्वर की देन मानते थे, न कि अपनी।

व्यक्तिवादी स्वरूप

★ रोजर बेकन ने अपनी कृति "ओपस माजस" में पुनर्जागरण की आदर्शवादी भावना को अभिव्यक्त किया है।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार, मध्यकालीन ईसाई धर्म व्यवहारिक धरातल पर तत्कालीन अर्थव्यवस्था की तरह सामूहिक था, लेकिन पुनर्जागरणकालीन व्यक्तिवाद में विविधता पायी जाती है। व्यक्तिपरक सोच बलवती होने लगी। इस व्यक्तिवाद के प्रकार से मानव का स्वाभिमान और अहंभाव मजबूत हुआ। अब कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि माइकेल एंजेलो या बोकेसियो अपनी कृतियों पर अपना नाम या हस्ताक्षर दर्ज न करवायें।

(5) बहुमुखी प्रतिभा के विकास का युग (Age of the development of multi talent) यह पुनर्जागरण का एक विशिष्ट स्वरूप है। पुनर्जागरण काल में अनेक बहुमुखी प्रतिभा के धनी शख्सियत हुए। यों तो पांचवी ई० पू० में पेरिक्लीज जैसे बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है कि हर युग में ऐसे व्यक्तियों का अवतरण होता आया है, लेकिन पुनर्जागरण काल में एक साथ इतने बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तियों का सम्मिलन आश्चर्यजनक है। पुनर्जागरणकालीन शिक्षकों ने परंपरागत विषयों के साथ-साथ नृत्य, संगीत, कविता और स्थानीय भाषा जैसे विषयों को भी पढ़ाया। वस्तुतः विद्यार्थियों को बहुमुखी बनाने का सार्थक प्रयत्न किया गया। 16वीं शताब्दी के यूरोप की सबसे लोकप्रिय पुस्तक 'Book of the Courtiers' (कैस्टिग लियोन) में दिखलाया गया है कि एक आदर्श दरबारी मात्र एक भद्रपुरुष ही नहीं बल्कि एक विद्वान,

बहुमुखी प्रतिभाओं का युग

एक सैनिक और एक कसरती भी था। माइकेल एंजेलो एक साथ चित्रकार, मूर्तिकार तथा अभियंता था। बहुमुखी प्रतिभा का सबसे सटीक उदाहरण लियोनार्डो द विंची था। पुनर्जागरण-काल का यह प्रसिद्ध व्यक्ति महान चित्रकार होने के साथ-साथ एक मूर्तिकार एवं स्थापत्यकार, गणितज्ञ, दार्शनिक, वनस्पति विज्ञान का ज्ञाता, मानवशरीर का विशेषज्ञ, भूगर्भशास्त्री, अभियंता तथा आविष्कारक भी था। इसी प्रकार, राफेल चित्रकार, वास्तुविद्, पुरातत्ववेत्ता, शरीर रचना विज्ञान का ज्ञाता आदि एक साथ था।

मध्यवर्गीय चेतना (Middle class Consciousness):-

मध्यवर्गीय स्वरूप

पुनर्जागरणकाल में इटालवी शहरों के धनी सौदागरों एवं बैंकरों ने साहित्यकारों और कलाकारों को प्रश्रय एवं समर्थन प्रदान किया। यह इस युग के मध्यमवर्गीय स्वरूप को दर्शाता है। वस्तुतः, पुनर्जागरण जनसाधारण का आन्दोलन नहीं था, अपितु धनी लोगों के संरक्षण में मध्यम वर्ग का आन्दोलन था। संपन्न तबका और मध्यमवर्ग ने समाज में अपने प्रमुत्व की स्थापना के लिए चर्च, पोप और सामंतों की तरह साहित्य और कला को संरक्षण प्रदान किया।

उपरोक्त उल्लेखित स्वरूपों के अतिरिक्त पुनर्जागरण का स्वरूप सामंत विरोधी, साहित्यिक मनोभाव, अनुसंधानपरक दृष्टि, सहज सौंदर्यपरक दृष्टि आदि था।

By :-

Dr. Rajiv Nayan,
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara

Scanned by CamScanner